सोपान वास्तु की वैज्ञानिक उपपत्ति
Scientifical Derivation of Staircase Vastu

निबन्ध प्रस्तुतकर्ता :- पं. राजेश कुमार मिश्र
शासकीय रामानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लालघाटी, भोपाल
Enrollment No - MPSV- 21- 00307
Mobile No - 9685901030

१. प्रस्तावना:-

वास + अस्तु = वास्तु। इस प्रकार रहने की कला या विधा को ही वास्तुशास्त्र कहते हैं।

भारतीय मनीषियों ने प्रकृति के वीच रहकर कुछ अनुभव प्राप्त किये जिनसे विभिन्न शास्त्रों का क्रमिक विकाश हुआ। भारतीय वास्तुशास्त्र भी एक प्राकृतिक विज्ञान है। पर्यावरण, भूगोल, अभियान्त्रिकी, भौतिकी, रसायन, पादप विज्ञान, जीव विज्ञान, खगोल, विकिरण, समस्त प्रकार की दृश्य एवं अदृश्य उर्जाऐं जैसे प्रकाश तरंग, चुम्बकीय तरंग, कोस्मिक तरंग, गुरुत्वाकर्षण तरंग, क्वान्टम् इत्यादि विषयों में वर्णित नियमों का ब्रम्हाण्ड के चराचर जगत पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्यक अध्ययन ही वास्तुशास्त्र की विषयवस्तु है।

प्राचीनकाल में लेखन सामग्री की न्यून उपलब्धता के कारण गुरुकुल में विद्यार्थियों को विषय का अभ्यास कण्ठस्थ रूप से कराया जाता था। मूल विषय वस्तु को कण्ठस्थ रूप से एवं उपपत्ति को मौखिक रूप से समझाई जाती थी। कालान्तर में गुरुकुल समाप्त हो गये इससे परिणाम स्वरूप मूल नियम तो विद्यमान हैं, लेकिन उपपत्ति का लोप हो गया। उपपत्ति के अभाव में भारतीय विज्ञान या शास्त्रों के विषयों को वर्तमान में शंका की दृष्टि से देखा जाने लगा है। अत:अव यह आवस्यक है कि विद्यार्थियों को वास्तुशास्त्र के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान का ज्ञान भी कराया जाये, इससे उनका सभ्यक विकास होकर वे क्यों और कैसे का उत्तर देने में सक्षम हो सकेंगे।

२. विषय प्रवेश:-

वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन में **सोपान** का अत्यधिक महत्व होता है। सोपान को सीढ़ी, जीना या स्टेयरकेस भी कहते हैं। सोपान के माध्यम से उर्जा तरंगों का प्रवाह भूतल से उच्च तलों की ओर या विपरीत दिशा में अनवरत विद्यमान रहता है। सोपान के वारे में प्राचीन वास्तु ग्रंथों में बहुत कम विवरण मिलता है, इस कारण अनेक भ्रान्तियां व्याप्त हैं। इस लेख में प्राचीन वास्तु शास्त्रीय सूत्रों एवं विद्यमान भवनों के सोपान विन्यास का आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

३. सोपान संख्या:-

सोपान में खड़े हुये फलक को '**स्थित**' या Riser कहते हैं तथा लेटे हुये फलक को '**शायिन**' या Tread कहते हैं। प्रस्तुत चित्र में '**स्थित**' को R से तथा '**शायिन**' को T से प्रदर्शित किया गया है।

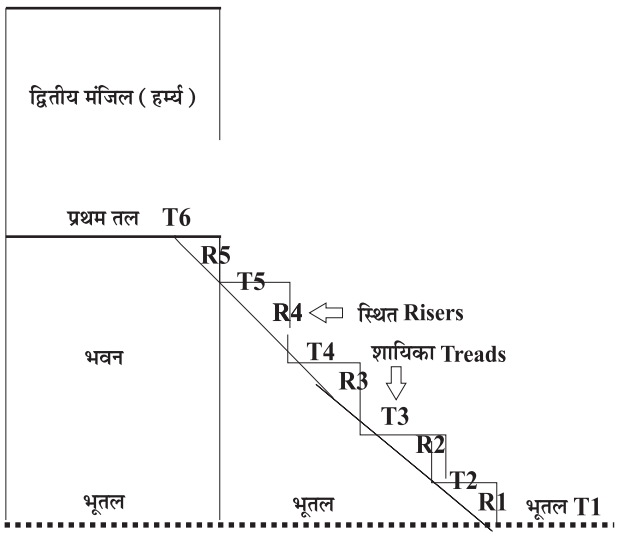

मयमतम् : अध्याय २१, श्लोक क्रमांक ९४ के अनुसार –

अयुग्मेव सोपानं गुह्या-अगुह्य वशात्ततः।
एकभक्तिविनिष्क्रान्तं मण्डपादिषु वाह्यतः।।

अर्थात सोपान के **'स्थित'** Risers की संख्या विषम होना चाहिये। इसमें भूतल को मिलाने पर कुल **'शायिन'** Tread संख्या सम हो जाती है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में गिनती की विषम-सम संख्याओं को क्रमशः **'क्रूराक्रूरौ'** कहा है। अतः **'शायिन'** (पदतल) संख्या सम होने से **अक्रूर (शुभ)** होती है।

समराङ्गणसूत्रधार : अध्याय १८, श्लोक क्रमांक ११ के अनुसार –

काष्ठकैर्यत्र रचितं स्थूयोरधिरोहणम्।
सा निःक्षेणिरिति प्रोक्ता सोपानैर्विपुलैः पदै।।

इस प्रकार समराङ्गणसूत्रधार में सोपानों की संख्या **'विपुल'** अर्थात् अनेक मात्र संकेत है, सम-विषम संख्या का स्पष्ट निर्देश नहीं है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पदताल लय **(रिदम्)** पूर्ण होने पर सोपानों पर चढ़ने-उतरने में श्रम का कम अनुभव होगा। अतः विषम संख्यक **'स्थित'** Risers **शुभ** होना स्वभाविक है।

३. सोपान आरोहण में आवर्त (दक्षिणावर्त-वामावर्त) : भ्रांति समाधान

मयमतम् : अध्याय २१, श्लोक क्रमांक ९५ के अनुसार –

सोपानं सर्ववर्णानां प्रादक्षिण्याधिरोहणम्।
प्रशस्तं विपरीतं तद् विनाशाय भवेदिह।।

इस श्लोक के अनुसार सभी वर्णों के सोपान दक्षिणावर्ती होना चाहिये अन्यथा विनाश होता है। यह तथ्य बहुप्रचलित है। लेकिन इस श्लोक से पहले श्लोक क्रमांक ८६ से ९० के वीच चार प्रकार के सोपानों का वर्णन है, इनमें से केवल श्लोक क्रमांक ८९ में दक्षिणावर्ती सोपान (**'अश्वपादोपरि स्थित्यारोहणं दक्षिणाङ्घ्रिणा'**) आदेशित है। अन्य तीन प्रकार के सोपानों के साथ यह नियम नहीं है।

अतः सम्यक रूप से यह कह सकते हैं कि सभी वर्ण के लोग को केवल अश्वपद (अर्धचंद्राकार) प्रकार के सोपान को दक्षिणावर्ती वनाना चाहिये।

हमारे पूर्वज विद्वानों के निर्देशन में वनाये गये प्रचीन मंदिरों और दुर्गों में भी वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती दोनों प्रकार के सोपान विद्यमान हैं।

अतः अव हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि **वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती दोनों प्रकार के सोपान** होते हैं।

सोपान केवल दक्षिणावर्ती होना चाहिये यह भ्रांति है।

४. सोपान आरोहण में आवर्त (दक्षिणावर्त-वामावर्त) : वैदिक एवं भूगोलीय मापदंड

किसी वास्तुपद में सोपान आरोहण दक्षिणावर्ती हो या वामावर्ती ? इसका निर्धारण भूखण्ड की पृथ्वी के गोलार्ध में स्थिति (उत्तर या दक्षिण अक्षांश), उस गोलार्ध में चक्रवात की विशेषता एवं भूखण्ड के वास्तुपद से किया जाता है। विन्दुवार विवरण इस प्रकार है :-

(एक) भूखण्ड की भौगोलिक स्थिति – (उत्तर या दक्षिण अक्षांश)।

पृथ्वी की भूमध्य रेखा (शून्य अक्षांश) से उत्तरी ध्रुव तक का क्षेत्र उत्तरी गोल कहलाता है, तथा भूमध्य रेखा से दक्षिणी ध्रुव तक का क्षेत्र दक्षिणी गोल कहलाता है। इसमें भूमध्यरेखा वृत्त के समानान्तर ९० अक्षांश होते हैं।

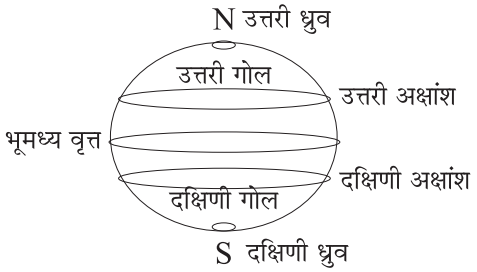

(दो) मरुद्गणों (चक्रवात) की प्रकृति के वैदिक प्रमाण

प्रकृति में ऊर्जा का प्रवाह मरुद्गणों के माध्यम से होता है। या ऐसा भी कह सकते हैं कि, प्रकृति के निकायों (नेचुरल सिस्टम) में जिस ऊर्जा से कार्य संपादन होता है वह मरुद्गण हैं। इसका प्रमाण वेदों और पुराणों में मिलता है। मरुद्गणों को उनके वैमात्रिक भाई इन्द्र द्वारा दिति के गर्भ में उनन्चास भागों में खण्डित करने वृत्तांत सर्वत्र कथित है। ४९ प्रकार के मरुद्गणों में से ७ प्रकार के मरुद्गण चक्रवात स्वरूप होते हैं। इन्हैं भारत में चक्रवात, बेस्टइन्डीज में प्रभंजन, फिलीपिन्स में बबंडर एवं अमेरिका में टोर्नेडो कहा जाता है। मरुद्गणों के अन्य लघु स्वरूप सामान्य वात एवं सूक्ष्म वात के ऊर्जा प्रवाह पृथ्वी पर निरन्तर विद्यमान रहते हैं। वात (वायु) की ऊर्जा के श्रोत्र मरुद्गण ही हैं, इसके प्रमाण हेतु ऋग्वेद के कुछ सूत्र इस प्रकार हैं –

(1) सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः।
मिहं कृण्वन्त्यवाताम्।। (ऋग्वेद 1.38.7)

भावार्थ – यह सत्य है कि वे कान्तिमान, बलिष्ठ रुद्रदेव के पुत्र वे मरुद्गण वात (पवन) सहित वर्षा करते हैं।

(2) को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः। यत्सीमन्तं न धूनुथ।। (ऋग्वेद 1.37.6)

भावार्थ –क्षितिज धरा को कम्पायमान करने वाले मरुतो! तुमसे वड़ा कौन है ? तुम वृक्ष की डालियों के तुल्य संसार को हिलाते हो।

(3) मरुतो यद्ध वो बलं जनां अचुच्यवीतन। गिरींरचुच्यवीतन।। (ऋग्वेद 1.37.12)

भावार्थ – हे मरुतो! आप अपने बल से लोगों को विचलित कर देते हैं, आप पर्वतों को भी विचलित करने में समर्थ हैं।

(इस तथ्य से सभी परिचत हैं कि जव चक्रवात आता है तव भीषण वर्षा भी होती है। वृक्ष उखड़ जाते हैं। जनजीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है)

चक्रवात दो प्रकार के होते हैं – वामावर्ती एवं दक्षिणावर्ती।

1 – उत्तरी अक्षांश वाले देशों में वामावर्ती चक्रवात या प्रतिचक्रवात (एन्टी क्लाँक वाईज) –

इसमें वायु का प्रवाह, घड़ी की सुई की विपरीत दिशा में बाहर से केन्द्र की ओर होता है। इस प्रकार के चक्रवात भूतल पर पृथ्वी के उत्तरी गोल में सक्रिय रहते हैं। इस प्रकार के चक्रवात प्राय: उत्तरी अक्षांश वाले देशों जैसे भारत, चीन, जापान, यूरोप, उत्तरी अमेरिका इत्यादि में आते हैं।

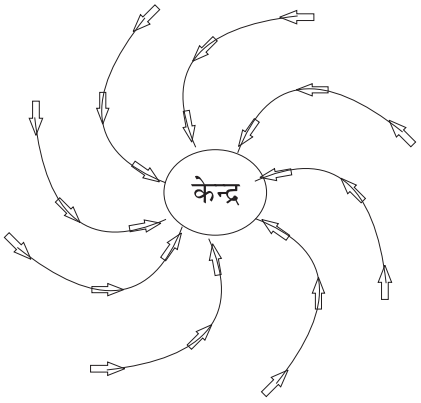

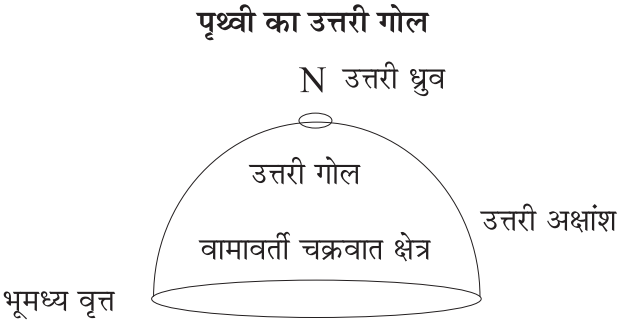

निष्कर्ष – उत्तरी अक्षांश वाले देशों में वामावर्ती चक्रवात होते हैं, इनमें में ऊर्जा का प्रवाह बाहर की ओर से केन्द्र की ओर होता है। अत: प्रकृति से शुभ ऊर्जा प्रवाह **(पोजीटिव इनर्जी)** प्राप्त करने के लिये शुभ वास्तु देवताओं के पद में सोपान का आरोहण **वामावर्ती (एन्टी क्लाँक वाईज)** वनाना शुभ होता है।

इसी प्रकार अशुभ ऊर्जा **(निगेटिव इनर्जी)** कार्य प्रदाता असुर पदों की ऊर्जा को भवन से बाहर करने हेतु इन स्थानों पर **दक्षिणावर्ती (क्लाँक वाईज)** सोपान वनाना शुभ होता है।

2 – दक्षिणी अक्षांश के देशों में दक्षिणावर्ती (क्लांक वाईज चक्रवात)–

इसमें वात यानि वायु का प्रवाह घड़ी की सुई की दिशा में, बाहर की ओर से केन्द्र की ओर होता है। इस प्रकार के चक्रवात भूतल पर पृथ्वी के दक्षिणी गोल में सक्रिय रहते हैं। यह चक्रवात आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका का दक्षिण भाग इत्यादि दक्षिणी अक्षांश वाले क्षेत्रों में आता है।

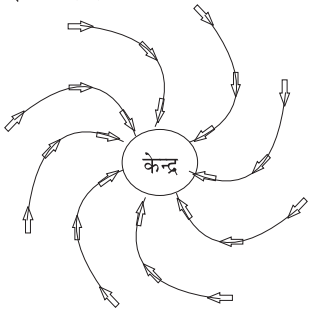

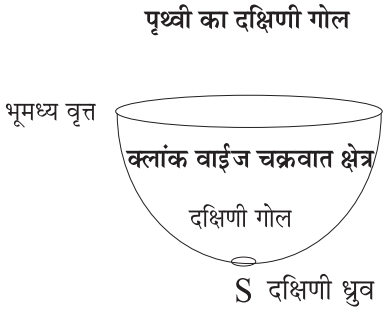

निष्कर्ष – दक्षिणी अक्षांश वाले देशों में दक्षिणावर्ती चक्रवात होते हैं, इनमें भी ऊर्जा का प्रवाह बाहर से केन्द्र की ओर होता है। अत: उत्तरी अक्षांशें के समान प्रकृति से शुभ ऊर्जा प्रवाह (**पोजीटिव इनर्जी**) प्राप्त करने के लिये शुभ वास्तु देवताओं के पद में सोपान का आरोहण **दक्षिणावर्ती (क्लाँक वाईज)** वनाना शुभ होता है। इसी प्रकार अशुभ ऊर्जा (**निगेटिव इनर्जी**) कार्य प्रदाता असुर पदों की ऊर्जा को भवन से बाहर करने हेतु इन स्थानों पर **वामावर्ती (एन्टी क्लाँक वाईज**) सोपान वनाना शुभ होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि, सोपान आरोहण का आवर्त दक्षिण एवं उत्तर गोल में परस्पर विपरीत दिशा में शुभाशुभ होता है।

(तीन) वास्तु देवता का या असुर का पद –

वास्तु मण्डल में सुर एवं असुर दोनों प्रकार के देवता हैं। वास्तुपद मण्डल में जहां पर सुर देवता हों वहां सोपान इस प्रकार वनाऐं जिससे प्रकृति की धनात्मक ऊर्जा भवन में प्रवेश करे। जहां पर असुर या उग्र पद हो वहां सोपान इस प्रकार वनाऐं कि असुर पद की ऋणात्मक ऊर्जा भवन से वाहर विसरित हो। 81 पदवास्तु में देवताओं की स्थिति चक्र में प्रदर्शित है।

वायव्य कोण — उत्तर — ईशान कोण

रोग	नाग	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	दिति	शिखि
पाप	रुद्र	मुख्य	भल्लाट	कुवेर	चरक	अदिति	आप	पर्जन्य
शोष	शोष	यक्ष्मा	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	पृथ्वीधर	आपवत्स	जयंत	जयंत
असुर	असुर	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	इन्द्र	इन्द्र
वरुण	वरुण	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सूर्य	सूर्य
पुष्पदन्त	पुष्पदन्त	मित्र	ब्रह्मा	ब्रह्मा	ब्रह्मा	अर्यमा	सत्य	सत्य
दौवारिक	दौवारिक	इन्द्र	विवस्वान्	विवस्वान्	विवस्वान्	सविता	भ्रंश	भ्रंश
सुग्रीव	जय	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	सवित्र	आकाश
पितृ	मृग	भृंगराज	गंधर्व	यम	वृहत्क्षत	वितथ	पूषा	अनल

पश्चिम — पूर्व

नैत्रत्य कोण — दक्षिण — अग्नि कोण

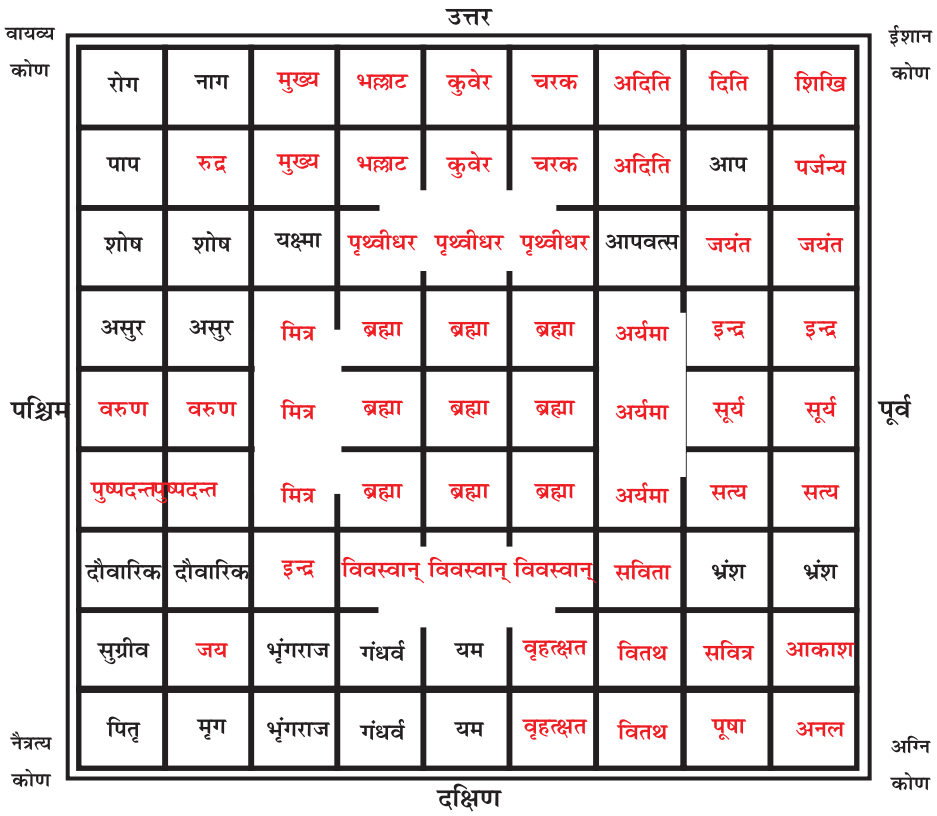

५ गोलार्ध के अनुसार दक्षिणावर्ती/ वामावर्ती सोपान का निर्णय

समराङ्गणसूत्रधार ग्रंथ के १४ वे अध्याय के श्लोक क्रमांक १३ से ३० तक वास्तुदेवों का निघण्टु वर्णित है। तदानुसार देवताओं की प्रकृति का वोध होता है। अत: उक्त आश्रय से असुर या उग्र (निगेटिव इनर्जी वाले) पद निम्न लिखित हैं।

1. भृश (मन्मथ), घर्षण 2. वितथ (कलियुग पुत्र) 3. यम। 4. भृङ्गराज (नैऋति नामक राक्षसी का पुत्र) 5. पितृ 6. शोष (शनि) 7. पापयक्ष्मा 8. रोग 9. विवस्वान (मृत्यु)

शेष ईशानादि अन्य 36 वास्तु देवताओं के पद धनात्मक ऊर्जा के स्त्रोत हैं।।

उत्तरी गोलार्ध के देशों में – उपरोक्त उल्लेखित 9 असुर/ अशुभ पदों पर दक्षिणावर्ती/ क्लाँकवाईज सोपान वनाना चाहिये। अन्य शुभ पदों पर वामावर्ती/ एन्टी क्लाँकवाइज सोपान वनाना चाहिये।

दक्षिणी गोलार्ध में – (उत्तरी गोलार्ध के विपरीत) असुर पदों में वामावर्ती तथा शुभ पदों में दक्षिणावर्ती सोपान वनाना चाहिये।

ज्ञातब्य – वर्तमान काल में शहरों में भूखण्ड लघु आकार में उपलब्ध हैं। अत: जिस स्थान पर सोपान प्रारंभ करना चाहते हैं, वहां पर यदि दो वास्तु पद हों तो जिस पद का भाग अधिक हो उस पद के देवता के अनुसार सोपान का निर्णय करना चाहिये।

६. असमान भुजाओं एवं विदिशा भूखण्डों पर पद विन्यास

वास्तु का मूल आधार दिशाऐं हैं। वास्तु देवताओं का स्थान दिशाओं में है। दिशाओं को कोणीय अंशों में नापा जाता है। पिछले पृष्ठ पर जो वास्तुपद विन्यास चक्र दिया है, वह निम्न लिखित विशेषताओं वाले भूखण्ड पर शुद्ध होता है।

(1) पूर्वादि दिशाऐं भूखण्ड की भुजाओं के मध्य में हों। एवं

(2) भूखण्ड चतुरस्त्र (वर्गाकार) हो। यानि लम्बाई–चौड़ाई बराबर हो।

उक्त दोनों शर्तों में से किसी भी एक शर्त के अभाव में, प्रचलित चौकोर पद विन्यास पद्धति से विन्यास करने पर वास्तु देवताओं की भूखण्ड में वास्तविक स्थिति प्रदर्शित नही होती है। अत: यह गंभीर अशुद्धि होती है। त्रिकोणमिति के सामान्य जानकार इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं। इस त्रुटि का प्रदर्शन चित्र द्वारा किया जा रहा है।

यदि भूखण्ड वर्गाकार तो हो,
लेकिन दिशा में झुकाव हो

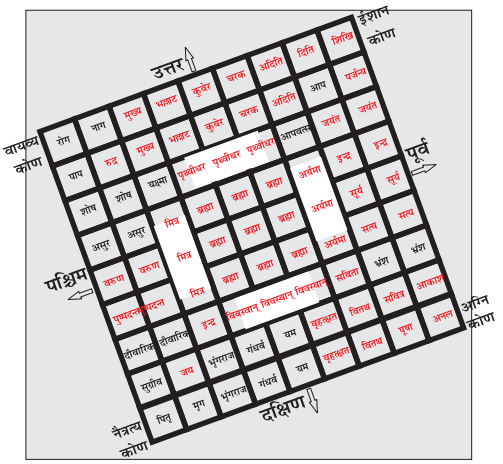

यदि भूखण्ड की दिशा ठीक हो,
लेकिन वर्गाकार न हो

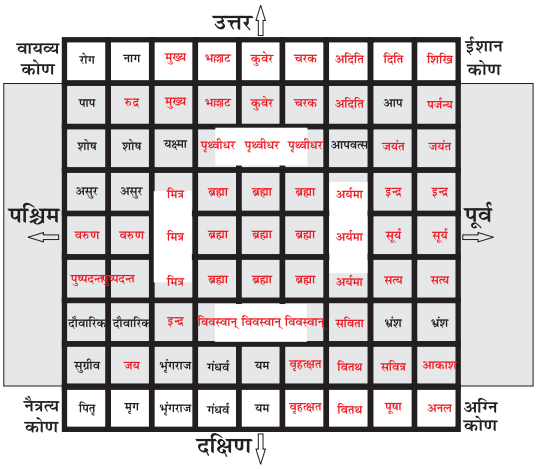

उपरोक्त चित्रों से स्पष्ट है कि प्रचलित पद्धति से किया गया पद विन्यास पूर्णत: अशुद्ध होता है। अत: विदिशा, झुकी हुई दिशा एवं असमान भुजा वाले भूखण्डों में शुद्ध वास्तुपद विन्यास हेतु हमारे वास्तु ग्रंथों में **वृत्तवास्तु विधान** का स्पष्ट निर्देश विद्यमान हैं। इसका वर्णन आगामी पृष्ठ पर दिया जा रहा है।

७. ज्यामिति Geometery गणित द्वारा वृत्त वास्तु विधान

– **अथोच्यते वृत्तवास्तुर्वृत्तप्रासाद हेतवे।** समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 13

भवार्थ – अव गोलाकार प्रासादों–भवनों, मंदिरों के लिये वृत्तवास्तु कहा जाता है।

– **देवता पद संक्षिप्तिरनयोश्चतुरश्रवत्।**

एवं कार्यवशात् कार्या वास्तवो–अन्ये–अपि धीमता।। समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 19

भवार्थ – उक्त (वृत्तवास्तु) विन्यासों में चतुरस्त्र वास्तु के अनुसार देवताओं का विन्यास करना चाहिये। बुद्धिमान वास्तुविद् को इसी प्रकार अन्य कार्यों के लिये वास्तु न्यासों की कल्पना करना चाहिये। अन्य कार्य आगे के श्लोक में कहे जा रहे हैं।

– **त्र्यश्रे षडषे चाष्टाश्रे, षोडशाश्रे च वृत्तवत्।**

वृत्तायते–अर्धचन्द्रे च, वास्तौ पद विभाजनम्।। समराङ्गणसूत्रधार–द्वादश अध्याय, श्लोक 13

भवार्थ – वृत्तवास्तु त्रिकोणीय, षडकोणीय, षोडषकोणीय एवं अर्धचन्द्राकार भूखण्डों में प्रयोजनीय होता है। आशय यह है कि, वर्गाकार एवं शुद्ध दिशा के भूखण्ड को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के भूखण्डों के लिये **वृत्तवास्तु पदविन्यास** करना चाहिये।

८१ पद वृत्तवास्तु विधान

81 पद का वृत्त वास्तु विन्यास बाहरी परिधि में 32 पद होते हैं। प्रत्येक पद 360 / 32 = 11.25 अंश का होता है। दो–दो पदों को मिलाने पर 22.5 अंश का एक क्षेत्र (वास्तु जोन) होता है।

इसी प्रकार कम्प्यूटर द्वारा ड्राइंग की साईज से वृत्त वास्तु पदों का विन्यास करना चाहिये। यह विधि निम्न लिखित एवं आगामी चित्रों से स्पष्ट है।

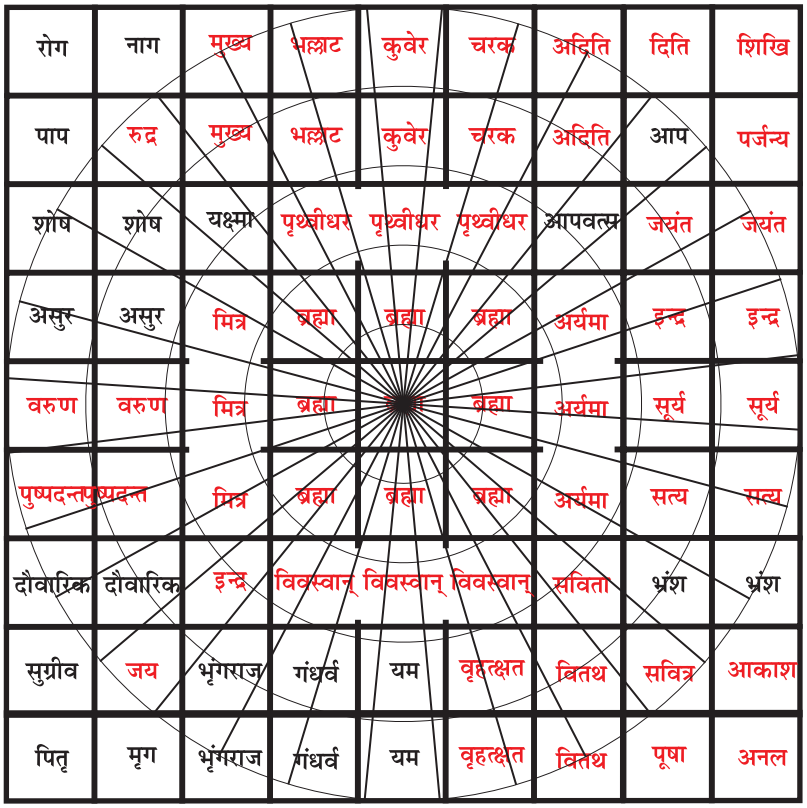

८. समराङ्गणसूत्रधार ग्रंथ के अनुसार 81 पद का वृत्तवास्तु एवं 16 वास्तु जोन चक्र

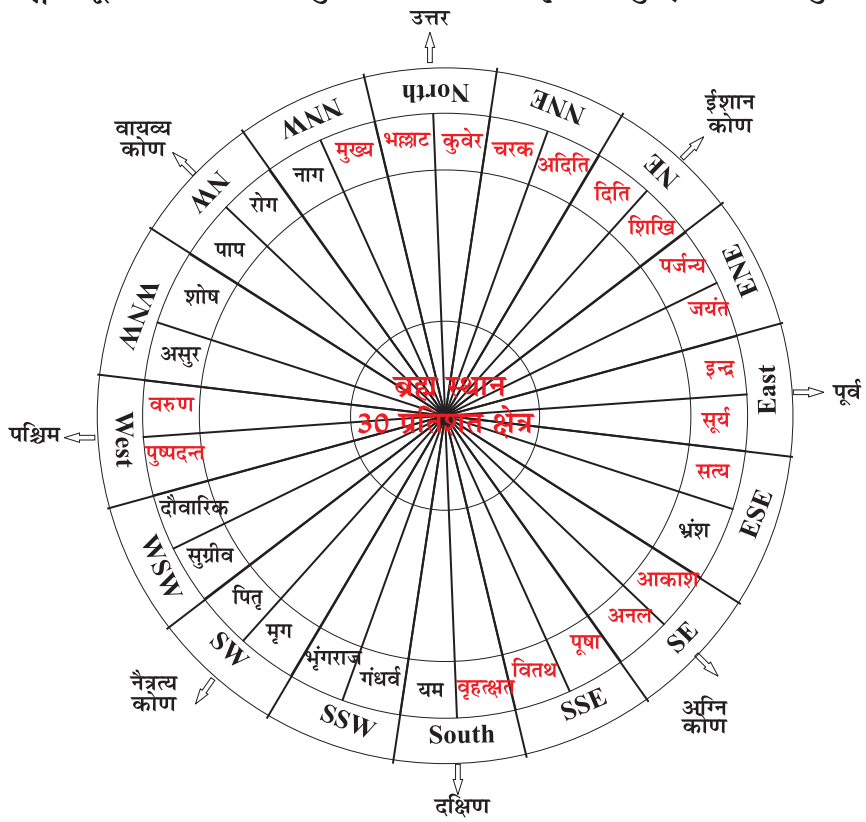

९. असमान आयताकार भूखण्ड पर 81 पद का वृत्तवास्तु एवं 16 वास्तु जोन चक्र

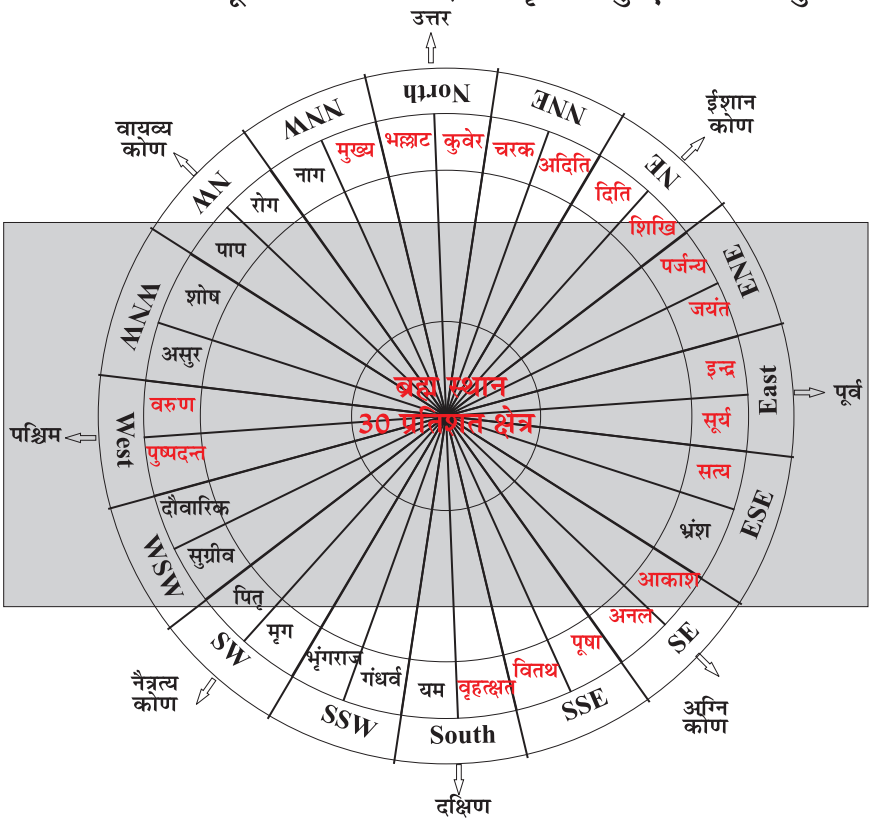

(1) उपरोक्त चक्र से स्पष्ट है कि, आयताकार भूखण्ड पर कुछ जोन का क्षेत्रफल बहुत ज्यादा और कुछ का कम होता है। इसलिये वास्तु ग्रंथों में प्लाट की चौड़ाई से उसकी लम्बाई दुगने से अधिक का निषेध किया है। लेकिन यदि एसे भूखण्ड पर सावधानी पूर्वक वास्तु देवताओं के क्षेत्रों का ध्यान रखते हूये नक्सा वनाया जाये तो दोष की संभावना नही रहती है।

१०. उपसंहार

(1) सोपान के वारे में वास्तु ग्रंथों में न्यूनतम् विवरण उपलब्ध होने से समाज में सम्पूर्ण वास्तु नियमों की अनभिज्ञता देखने में आई है। सवसे ज्यादा भ्रम इस वात को लेकर है कि सोपान का आरोहण केवल दक्षिणावर्ती होना चाहिये। जवकि यह पृथ्वी के गोलार्ध एवं वास्तुपदों पर निर्भर है। इसके निर्धारण में मरुद्गणों का महत्वपूर्ण योगदान है। वेद वाक्यों एवं चक्रवातों के विज्ञान से इसभ्रम का निवारण किया गया है।

(2) दूसरा भ्रम मुख्य द्वार के निर्धारण में प्रचलित पद्धति (भूखण्ड की भुजा की लम्बाई में 9 का भाग) से करने का है। यह विधि केवल चतुरस्त्र (वर्गाकार)एवं शुद्ध दिशा के भूखण्ड हेतु ही होती है। विदिशा एवं वर्गाकार को छांड़कर अन्य सभी प्रकार के भूखण्डों हेतु प्राचीन वास्तु ग्रंथ समराङ्गणसूत्रधार के अनुसार वृत्तवास्तु चक्र से वास्तु पदों का स्थान निर्धारित करना चाहिये।

पं. राजेश कुमार मिश्र

पुष्पांजलि वेदांग पीठ,
133, मास्टर्स रेजीडेन्सी,रोहित नगर, बावड़िया कला,
भोपाल (म. प्र.)। पिन 462039
मोवा. 9685901030

दिनांक - 25 जून 2022,
3:30 PM